प्रथम अध्याय

ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

"ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रास्ताविक -

मनुष्य जिस धार्मिक, सामाजिक परिवेश में जन्म लेता है उस परिवेश का प्रभाव स्वाभाविक रूप से उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित होने के कारण उनकी सारी कहानियाँ दलित जीवन से संबंधित हैं।

खुद दलित तो हैं ही साथ ही दलित जीवन-व्यथा और पुनरसर्जन क्षमता के साथ चरम संतुलन पर आने के बाद ही प्रामाणिक रचना ओमप्रकाश वाल्मीकि को संभव हो गई है। उन्होंने अपनी संवदेनात्मक प्रक्रियाएँ तथा अनुभूति के उस स्तर को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है, जहाँ उनकी वैयक्तिकता का परिबोधन करके सामाजिक स्तर पर स्वीकृति के योग्य हो सके ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के संदर्भ में शिवकुमार मिश्र का कथन दृष्टव्य है- " हिंदी साहित्य में अल्प अवधि में दलित लेखन में जिन कुछ लोगों ने दलित रचनाशीलता और हिंदी की वृत्तहर सर्जना में अपनी खास पहचान बनाई है उनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का नाम सहज ही सबसे ऊपर है।"[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभवों की कहानियाँ हैं, जो एक ऐसे यथार्थ से साक्षात्कार कराती हैं, जहाँ हजारों साल की पीड़ा अँधेरे कोनों में दुबकी पड़ी है। उन्होंने अपनी कहानियों में आंदोलन धर्मी कहानी से संबंध स्थापनाओं की असंगतियों और अंतरविरोधों को स्पष्ट कर दिया है। उनकी कहानियाँ शुद्ध सैदध्ांतिक मतामतों के आवर्त से निकालकर सीधे परिवेश की संबंद्धता में सही दलित आदमी के अनुभव जगत में ले जाती हैं। यथार्थ का अन्वेषण और वैयक्तिक अनुभवों की तटस्थ बौद्धिक अभिव्यक्ति ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा

---

1 संपा.आग्नेय - 'साक्षात्कार' नवंबर 2001, पृष्ठ 98

दलित साहित्य के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी । दलितों में चेतना जगाने या अधिकारों की लड़ाई में मालिक बनने का दुस्साहस करनेवाले लोगों पर उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा गहरा आक्रोश प्रकट किया है। यहाँ सोलजी के थॉमस का कथन दृष्टव्य है - "उनकी कहानियाँ दलित लोगों की यातनापूर्ण जिंदगी का जीवंत दस्तावेज है। खुद उस वर्ग के होने की वजह से उसकी प्रमाणिकता असंदिग्ध हैं।"[1] चूहड़े जाति में जन्मे ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने बचपन में बहुत कुछ सहा है। बचपन में उन्हें पल-पल अपमानित होना पड़ता था, इस कारण उनका बाल-मन द्रवित हो उठता था। बाद में दलित और उन पर होते अन्याय के प्रति उनकी लेखनी कभी चुप नहीं बैठी। राजेंद्र यादव जी इनकी कहानियों के संदर्भ में कहते हैं - ' दलित जीवन पर लिखी जितनी कहानियाँ हैं, उनका प्रतिनिधित्व करनेवाली ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ हैं।'[2]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित जीवनगत अंन्तर्विरोधों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न विसंगतियों और तनाओं की यातनाएँ भोग रहा है, वह जो यातना भोग रहा है वह आज के आम आदमी को आदमी होने के एहसास से ही वंचित कर रही है, उसे आदमियत के दायरे से खारिज कर रही है, दलितों की जीने की आवश्यकता ही उसे शैतान से लड़ा रही है यह उनकी कहानियों में प्रतीत होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलितों के जीवन संघर्ष और उनकी बेचैनी के जीवंत दस्तावेज हैं। उनकी कहानियों में दलित जीवन की व्यथा, छटपटाहट और सरोकार साफ-साफ दिखाई पड़ते हैं। इस संदर्भ में शिवकुमार मिश्र का कथन दृष्टव्य है - "उन्होंने अपनी कहानियों में दलित जीवन के सुख-दु:ख, कष्ट क्लेश, उपेक्षाएँ, प्रताड़नाएँ, कुंठा, घुटन तथा कुछ सपने तथा उनके लिए किए जाने वाले संघर्ष को उजागर किया है।"[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि की साहित्य की मांग विंश्वदृष्टि, जातिभेद त्याग तथा उदात्त आदर्श

---

1 सम्पा. विभूतिनारायण लाल - 'वर्तमान साहित्य' (त्रैमासिक), जुलाई सिंतबर, 2002, पृष्ठ 33

2 सम्पा. आग्नेय - 'साक्षात्कार' नवम्बर, 2001, मासिक से, पृष्ठ 99

भाव तथा आदर्श जीवन निर्माण करना जो संपूर्ण मानव जाति की जातीय सीमा लांघकर मानव जाति को सत्य के प्रशस्त मार्ग पर आग्रसर करना ही है।

'जूठन' जैसी उनकी आत्मकथा पढ़ने पर ऐसा लगता है कि, ओमप्रकाश जी ने जिस तरह का जीवन जीया है उसके मुकाबले हम कुछ भी नहीं । उनके जीवन के विविध पहलुओं को शब्दों में बाँधना आसान नहीं। फिर भी उनकी साहित्य कृतियों को समझ लेने हेतु उनके व्यक्तिगत जीवन को समझ लेना निश्चय ही सहायक सिद्ध होगा इसमें संदेह नहीं । इसी उद्देश्य से यहाँ उनके व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत है -

1.1 व्यक्तित्व -

1.1.1 जन्म -तिथि एवं जन्म - स्थान -

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म एक गरीब परिवार में चूहड़े जाति में हुआ। उनकी जन्मतिथि के संदर्भ में वे लिखते है - ''बचपन जिस परिवार में बीता वहाँ जन्मतिथि को सँभाल रखना संभव नहीं था। जिस समय पिताजी स्कूल लेकर गये और दाखिले पर मास्टर साहब ने जो लिख दिया वही जन्मतिथि बन गयी ।''[1] अर्थात पाठशाला के रेकॉर्ड के अनुसार 30 जून 1950 ही उनकी जन्मतिथि और बरला नामक छोटा सा गाँव ही उनका जन्मस्थान सिद्ध होता है जो उत्तर प्रदेश के मुजफफ़रनगर जिले में स्थित है।

1.1.2 परिवार -

लेखक के परिवार में पाँच भाई, एक बहन, दो चाचा और एक ताऊ आदि रहते थे। चाचा और ताऊ अलग रहते थे। बिना काम उनको रोटी नसीब न थी। गाँव के त्यागी (तगाओं) के घर जाकर साफ-सफाई से लेकर, खेती-बाड़ी, मेहनत-मजदूरी और रात-बेरात बेगारी करके अपने परिवार की जीविका चलाया करते थे। इन कामों के बदले इन्हें अनाज या पैसों से ज्यादा गाली गलौज और प्रताड़ना ही मिलती थी। यह सब कुछ सहना ही उस समय बुद्धिमानी का काम था। ओमप्रकाश वाल्मीकि भी बचपन में इस तरह के काम करके कभी कबार अपने परिवार वालों की मदद करते थे।

---

1 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

1.1.3 कुलपरंपरा -

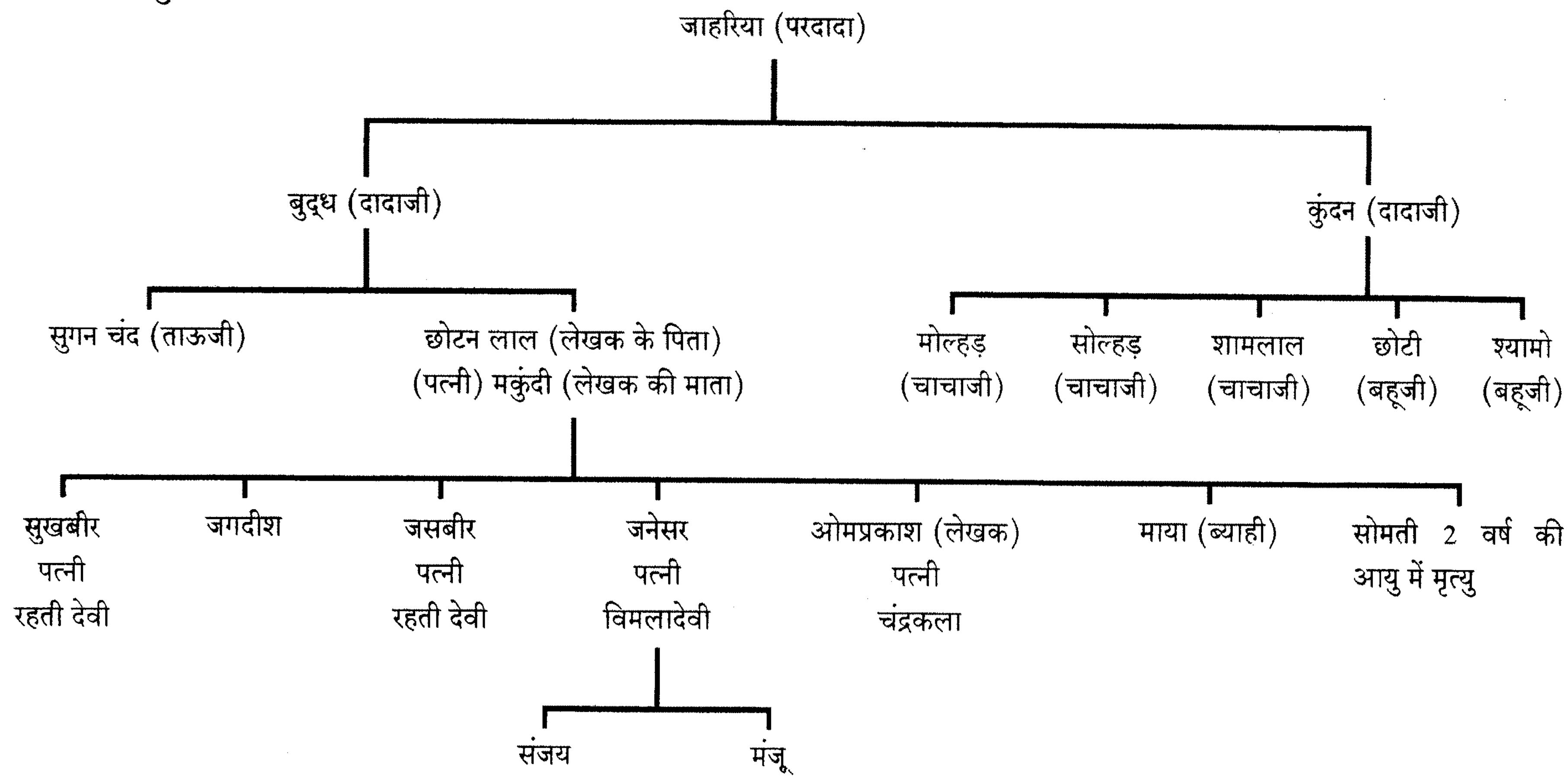

जाहरिया (परदादा)
बुद्ध (दादाजी)
कुंदन (दादाजी)
सुगन चंद (ताऊजी)
छोटन लाल (लेखक के पिता)
(पत्नी) मकुंदी (लेखक की माता)
मोल्हड़
(चाचाजी)
सोल्हड़
(चाचाजी)
शामलाल
(चाचाजी)
छोटी
(बहूजी)
श्यामो
(बहूजी)
सुखबीर
पत्नी
रहती देवी
जगदीश
जसबीर
पत्नी
रहती देवी
जनेसर
पत्नी
विमलादेवी
ओमप्रकाश (लेखक)
पत्नी
चंद्रकला
माया (ब्याही)
सोमती 2 वर्ष की
आयु में मृत्यु
संजय
मंजू

ओमप्रकाश वाल्मीकि के पर दादा का नाम जाहरिया था। उन्हें बुद्ध और कुंदन यह दो लड़के थे । कुंदन को मोल्हड़, सोल्हड़ और श्यामलाल यह तीन लड़के और छोटी एवं श्यामो यह ल ड़कियाँ थी। बुध्द के सुगनचंद और छोटनलाल यह दो बेटे। छोटनलाल याने लेखक के पिता इन्हें सुखबीर, जगदीश, जसबीर, जनेसर और ओमप्रकाश (लेखक) यह पाँच बेटे एवं माया और सोमती यह दो बेटियाँ थी । सोमती की मृत्यु दो साल की आयु में हो गयी थी। ओमप्रकाश लड़कों में सबसे छोटे थे , इस वजह से परिवार का उन्हें ज्यादा प्यार मिला। इनकी छोटी बहन है माया जी । इस तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि की कुल परंपरा उपलब्ध है।

1.1.4 माता-पिता -

माता -

ओमप्रकाश वाल्मीकि के माताजी का नाम 'मुकुंदी' था। लेकिन सब लोग उन्हें 'खजुरीवाली' इस नाम से पुकारते थे। सहारनपुर जिले में हिंड़न नदी के किनारे 'खजुरी' नाम का एक गाँव है, जो लेखक का ननिहाल है- इसी खजूरी गाँव से होने के कारण लेखक की माताजी को सब लोग 'खज़ुरीवाली' कहके पुकारते थे। लेखक उनकी माताजी से बहुत प्रभावित थे। लेखक कहते है - " मुझे कहानी तथा कथा-कथन करने का शौक अपनी माँ से प्राप्त हुआ है। मुझे मेरी माँ रात में कहानियाँ धारावाहिक के रूप में सुनाती थी। रात में सो जाने के बाद कहानी का अगला हिस्सा दूसरे दिन सुनाया जाता था, इसलिए मेरे मन में चेतना जगाने का काम मेरी माँ के आदर्श तथा धारावाहिक चलनेवाली कहानियों ने किया है।"[1]

पिता -

लेखक के पिताजी का नाम छोटनलाल था। खुद अनपढ़ थे। लेकिन ओमप्रकाश को पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी । जहाँ खाना नसीब न हो ऐसी हालत में अपने बेटे को पढ़ाने की जिद्द इनके मन में पनपती थी । हमारा बेटा पढ़ेगा तो हमारी जाति

---

1 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

सुधरेगी यही शिक्षा के प्रति इनकी अपेक्षा थी। अपने बेटे को पढ़ाने के लिए इन्हें बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है।

1.1.5 बचपन -

ओमप्रकाश वाल्मीकि सबसे छोटे होने के कारण माता-पिता का प्यार इन्हें सबसे ज्यादा मिला । इस वजह से ही शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण प्रतिकुल परिस्थिति में भी आशावादी था। लेकिन घर के बाहर का परिवेश कुछ अलग ही था। लेखक लिखते है - '' चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाएँ । तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग-धड़ंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े बस यह था वातावरण जिसमें बचपन बीता ।''[1] सब से छोटे और लाड़ले होने के कारण स्कूल भेजे गए । लेकिन जाति और दलित जीवन क्या होता है वह बचपन से ही इन्हें देखना और सहना पड़ा था। वे लिखते है - ''अछूत परिवारों का जैसा जीवन होता है वही भोगा, अध्यापकों की गालियाँ सुनी, साथियों की प्रताड़नाएँ इसीलिए अंतमुर्खी होता गया । साहित्य से गहरा जुडाव भी उसी दौरान हुआ ।''[2] लेखक के घर के ठीक पीछे गाँव भर की औरतें, लड़कियाँ, नई-नवेली दूल्हने टट्टी-फरागत के लिए बैठकर खुले सौचालय में निवृत्ति पाती । बरसात के दिन नरक से कम नहीं थे। किचड़ और किचड़ ही इनकी जिंदगी बन जाती थी। बारिश के कारण मख्खी-मच्छर तो इनके घर के सदस्य बनकर रहते थे। ऐसे वातावरण में ओमप्रकाश वाल्मीकि का बचपन अपने भविष्य की ओर अग्रेषित हो रहा था।

1.1.6 शिक्षा -

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म दलित परिवार में होने के कारण इन्हें अनेक सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता था । लेकिन ओमप्रकाश जी की शिक्षा के प्रति बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धिमता परिलक्षित होती है। घर के छोटे-मोटे काम के साथ दोपहर बाद सूअर चराने की जिम्मेदारी सँभालकर शिक्षा हासिल कर रहे थे। इनके

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन', पृष्ठ 11

2 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

मोहल्ले में सेवक राम मसीही नाम के व्यक्ति आते थे जो चूहड़ों के बच्चों को पढ़ाते थे, इनके पास लेखक को भेजा गया। लेखक लिखते है - " मास्टर सेवक राम मसीही के खुले, बिना कमरों, बिना टाट-चटाइंवाले स्कूल में अक्षर ज्ञान शुरू किया था।"[1] उसके बाद बेसिफ प्रायमरी विद्यालय में बड़े चक्कर काट-काटकर दाखिला कराया गया । डर के साएँ में रहकर शिक्षा के लिए तमाम कष्ट एवं प्रताड़ना सहनी पड़ती थी। त्यागियों के बच्चे स्कूल में इन्हें ' चूहड़े ' का क्रहके हमेशा चिढ़ाते थे। स्कूल में प्यास लगे तो हैंड़पप के पास रहकर किसी के आने का इंतजार करना पड़ता था। हैंड़पंप को छूने पर लड़के पीटते और मास्टरजी सजा देते थे। इस संदर्भ में रजनी तिलक लिखती है - " भारतीय शिक्षा व्यवस्था के जनक शिक्षकों के मनपटल से ही जाति का संस्कार नहीं निकल सका तो वह छात्रों को कैसे समानता व जातिभेद के शिक्षा दे सकेंगे ? "[2] इस आशा से ओमप्रकाश वाल्मीकि ने स्कूल में कदम रखे थे कि मास्टरों दूवारा सभ्यता के गुण, आदर्श, अनुशासन एवं नैतिकता के आदर्शों की शिक्षा मिल सके लेकिन ऐसे आदर्शों की अपेक्षा जातीय हीनता से प्रताड़ित करना, जाति सुचक गाली-गलैज देना ही उनके व्यवहार में था। लेखक को स्कूल में शिक्षा कम और काम ज्यादा करना पड़ता था। हेडमास्टर के आदेश पर उन्हें स्कूल के कमरे बरामदे और मैदान भी साफ करने पड़ते थे। बचपन में स्कूल में लेखक को काम करते देखकर उनके पिताजी और हेडमास्टर के बीच बहुत बड़ा झगड़ा भी हुआ था । लेखक पाँचवीं पास हो जाने के बाद त्यागी इंटर काँलेज का नाम बरला इंटर कॉलेज बरला करा दिया । बुरी हालत में उन्होंने कॉलेज में प्रवेश किया। चूहड़े जाति से होने के कारण उनको सिर्फ अपमान ही सहना पड़ता था। ग्यारहवीं अच्छे अंकों से पास होने पर इन्हें बारहवीं कक्षा में ज्यादा कष्ट उठाने पड़े । लेखक लिखते है - " भविष्य इसी परीक्षा के परिणाम पर टिका था। कई महीने तक जब मैं प्रैक्टिकल नहीं कर पाया तो मुझे ऐसा महसूस होने लगा था, जैसे जान - बूझकर ऐसा किया जा रहा है । एक ....

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन' से, पृष्ठ 12

2 सम्पा. कुसुम चतुर्वेदी रजनि तिलक - नया मानदंड, एप्रैल-जून, 2003, पृष्ठ 49

रोज उसने मुझे सभी के सामने आपमानित भी किया था। और प्रयोगशाला से बाहर कर दिया था। मैंने पूछा भी था, मेरी गलती क्या है ? कोई नुकसान मुझसे हुआ है ? लेकिन बृजपाल सुनने को तैयार नहीं था।''[1] मास्टर बृजपालसिंह ने इन्हें प्रैक्टिकल नहीं करने दिया, परिणाम स्वरूप वे फेल हो गए । उसके बाद बरला कॉलेज को हमेशा के लिए छोड़कर डी. ए. वी. इंटर काँलेज, देहरादून में दाखिला कराया । वहाँ भी जाति हीनता ने इनका पीछा नहीं छोड़ा । पढ़ाई के दौरान - ''आर्डनैस फैक्टरी चंद्रपुर (महाराष्ट्र) में एक डिजाईनर के तौर पर नौकरी मिली । 13 वर्ष चंद्रपुर में रहकर देहरादून तबादला हुआ और फिर देहरादून आते ही अधूरी पढ़ाई शुरू कर इन्टर बी.ए. और फिर एम.ए. (हिंदी साहित्य) 1992 में हेमवती नंदन बहुगुण, गढ़वाल, श्रीनगर वि.वि.से पास किया, व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में।''[2] बचपन में मास्टरों की मार-पीट, बच्चों द्वारा चिढ़ाना, अध्यापकों की साजिशें ऐसे कई संघर्षों का सामना करते-करते ओमप्रकाश वाल्मीकि ने एम.ए. (हिंदी साहित्य) तक की पढ़ाई पूरी की है।

1.1.7 नौकरी -

जब बारहवीं कक्षा में पढ़ते थे तब ओमप्रकाश वाल्मीकि ने चर्चा सुनी कि रायपुर के बम-फैक्टरी में हायस्कूल पास लड़के भर्ती करवा लिये जानेवाले है। इसलिए उन्होंने भी ड़ाक से अपना नाम भेज दिया । कुछ दिनोंबाद लिखित परीक्षा हुई जिसमें लेखक का भी चयन हुआ । अप्रैंटीस बनकर लेखक को आर्डिनैस फॅक्टरी देहरादून में प्रवेश मिला। प्रशिक्षण के बाद प्रतियोगात्मक परीक्षा हुई जिसमें ओमप्रकाश वाल्मीकि भी चुने गए । इस चयन ने उनके जीवन के नए द्वार खोल दिए थे।

कुछ दिनोंबाद अंबरनाथ (मुंबई) में ड्राफ्टमन के ट्रेनिंग के लिए आवेदन माँगे थे। वहाँ लिखित परीक्षा में ओमप्रकाश वाल्मीकि का चयन हुआ और मुंबई के लिए बुलावा आ गया । मुंबई (बम्बई) में ढ़ाई वर्ष के प्रशिक्षण के बाद सही रूप में आर्डिनैस

---

1 . ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन' से, पृष्ठ 81

2 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

फैक्टरी, चांदा (चंद्रपुर महाराष्ट्र) में नियुक्ति हो गयी ' आपकों नौकरी मिली या आपने चुनी ' इस संदर्भ उनका कथन है - " क्या जीवन के क्षेत्र चुनने की छूट भारत में दलितों को है ? क्षेत्र से ज्यादा जीविका चलाने के लिए जो भी नौकरी सामने आयी कर ली । कोई अफसोंस नहीं है। जीवन और समाज की यही वास्तविकता भी है। "[1]

1.1.8 रहनसहन तथा खानपान

ओमप्रकाश वाल्मीकि का रहन-सहन एकदम सीधा-सादा और सरल है। उनकी भाषा में कोमलता है। उनका हर एक शब्द अच्छे विचारों की व्याख्या करता है। सदृढ़ कद, आकर्षक एवं गोल चेहरा, सीधे सादे कपड़े इनके बाह्य व्यक्तित्व का परिचय देते हैं।

खान-पान के संदर्भ में वे पूर्ण मुक्त हैं। वे कहते हैं -" मैं पूर्णत: मांसाहारी हूँ, कहीं भी, कीसी भी दिन, कुछ भी खा सकता हूँ । सामनेवाला अगर प्यार से खिलाएगा तो न खानेवाली वस्तुएँ भी मैं खाने के लिए तैयार हूँ । सामनेवाले की मुझपर दृढ़ भक्ति तथा स्नेह हैं, तो मैं जहर खाने के लिए भी तैयार हूँ, बस्स ! सामनेवाले की नियत अच्छी होनी चाहिए ।"[2] इससे स्पष्ट है कि उन्हें अच्छे इन्सानों की तलाश है। वे स्नेह तथा प्रेम के पुजारी हैं। वे खान-पान में कोई बंधन नहीं रखते हैं।

1.1.9 विवाह -

भाई ने ओमप्रकाश वाल्मीकि के लिए लड़की देखी थी। लेकिन उन्होंने अपनी स्वर्णलता भाभी की छोटी बहन चंदा जी से सीधा शादी संबंधी पूछा था, चंदाजी उस वक्त इंटर कॉलेज में पढ़ती थी। चंदा जी के हाँ कहने के बाद घर का कुछ विरोध सहते हुए 27 दिसंबर 1973 को चंदा जी से शादी की । उनका विवाह - " हिंदू रीति से हुआ क्योंकि ससुराल पक्ष की यही जिद्द थी। "[3] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने शादी के लिए सीधी चंदा जी से बात की थी। इसका कारण वे बताते हैं कि - " परिवार के लोग जिस तरह की लड़कियाँ

---

1 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

2 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

3 परिशिष्ट 2 से उद्धृत

मेरे लिए ढूँड़ रह थे इससे मैं सहनत नहीं था और कोई वजह नहीं थी।''[1] उनकी '' पत्नी का स्वभाव सहज और सामान्य है ''[2] अभी ओमप्रकाश जी और चंदा जी का वैवाहिक जीवन काफी सुखद चल रहा है।

1.1.10 संतान -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कोई संतान नहीं है। लेकिन उनका कहना है- ''मुझ पर प्रेम करनेवाले, मेरे साहित्य को पढ़नेवाले , मेरे मन तथा भाव को समझनेवाले आप जैसे सारे विद्यार्थी मेरी ' संतान ' ही है। ''[3]

स्पष्ट है कि अपने पाठक एवं छात्रों में ही ओमप्रकाश जी संतान का स्नेह पाते हैं। इसलिए संतान का अभाव उनको खटकता नहीं।

1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व के कुछ पहलू -

1.2.1 साहसी एवं सत्यप्रिय -

ओमप्रकाश वाल्मीकि चूहड़े जाति से होने के कारण बचपन से उन्हें बहुत सारे जातीय दंश झेलने पड़े थे। लेकिन ऐसी स्थिति में भी वे ड़गमगाते नहीं थे। कोई व्यक्ति नाम या जाति पूछे तो वे बेहिचक बताते चूहड़ा या भंगी । इससे मनेवालों की नजरों में उनके बारे में घृणा, तिरस्कार, प्रताड़ना, अपमान और बेइज्जती आदि की भावना बढ़ती थी जिसका सामना करने की उन्हें आदत ही पड़ गयी थी।

एक दिन उनके मास्टर ने ओमप्रकाश और भिक्खूराम को गेहू लाने अपने गाँव भेजा था। मास्टर के घरवालों ने उन दोनों को खाना खिलाया । कुछ देर बाद ओमप्रकाश को घर के बुजूर्ग ने जाति पूछी, तो उन्होंने सीधा बता दिया ' चूहड़ा ' जात हैं। तो गुस्से से उस बुजुर्ग ने लाठी भिक्खूराम के पीठ पर मारी और वहाँ से भगा दिया ।

---

1 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

2 परिशिष्ट 2 से उद्धृत

3 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

भिकूखराम, ओमप्रकाश वाल्मीकि पर गुस्सा करता है और कहता है - " झूठ बोलकर अच्छा खाना मिला, इज्जत मिली और सच बोलकर लाठी खाई बेइज्जती हुई ।"[1] लेकिन सत्य से सामना करना ही ओमप्रकाश जी का धर्म है। जाति छिपाकर झूठ बोलकर झूठा मान-सम्मान प्राप्त करना उन्हें पाप लगता है।

1.2.2 बहुभाषी -

ओमप्रकाश वाल्मीकि उत्तर प्रदेश से होने के कारण वहाँ की पंजाबी और हरियानी भाषा से मेल खाने वाली कौरवी भाषा तो वे बोलते ही हैं साथ ही हिंदी, मराठी, अँग्रेजी, पंजाबी, खड़ीबोली और बंगला आदि भाषाओं पर भी इनकी अच्छी पकड़ है।

1.2.3 वाचन प्रिय -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को पुस्तकों से बहुत लगाव है, उन्होंने अपने स्कूली जीवन में ही अनेक सारी कितावें पढ़ डाली थी। जब वे आंठवीं कक्षा में पढ़ते थे तब रवींद्रनाथ टैगोर, शरदचंद्र, प्रेमचंद आदि को पढ़ डाला था। शरदचंद्र के साहित्यिक पात्रों से वे बहुत प्रभावित हुए थे। ओमप्रकाश जी ने अपनी अनपढ़ माँ को - " आल्हा ', 'रामायण', महाभारत से लेकर ' सूर सागर ' , ' प्रेम सागर ', ' सुख सागर', ' प्रेमचंद ' की कहानियाँ, ' तोता मैना ' के किस्से ... जो भी मिला सुना दिया ।"[2] पढ़ने की आदत ने उन्हें चुप नहीं बैठने दिया । आर्डिनैंस फैक्टरी ट्रेनिंग संस्थान अंबरनाथ (बम्बई) के छात्रावास पुस्तकालय में " पास्तरनाक, हेमिंग्वे, विक्टर ह्यूगो, पियरे लूई, टॉलस्टाय, पर्ल एस बक, तुर्गनेव, दॉस्तोएवस्की, स्टीवेंसन, आस्कर वाइल्ड, रोम्याँरोला, एमिल जोला को पढ़ा था। यही रहते हुए रवींद्रनाथ टैगोर, कालिदास का संपूर्ण वाङ्मय पढ़ा।"[3] मराठी साहित्य के प्रति भी इनका गहरा लगाव था। दलित साहित्य मराठी साहित्य को नई पहचान दे रहा था, तब दया पवार, नामदेव ढसाळ, गंगाधर पाणतावने, बाबुराव बागुल , केशव मेश्राम, नारायण सुर्वे, रामन निंबाळकर, यशवंत मनोहर आदि के साहित्य ने ओमप्रकाश

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि -'जूठन' , पृष्ठ 66

2 वही, पृष्ठ 27

3 वही, पृष्ठ 106, 107

वाल्मीकि के मनपर गहरा प्रभाव डाला था। इससे उनकी बचपन से ही व्यापक वाचन क्षमता सिद्‌ध होती है।

1.2.4 नाटक प्रिय -

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने चंद्रपुर (महाराष्ट्र) में' मेघदूत' नाम की नाट्य संस्था निकाली थी । उन्होंने अपनी पत्नी के साथ कई नाटकों का मंचन भी किया था। ' आधे-अधूरे ', 'दूलारीबाई ', 'हिमालय की छाया ', ' सिंहासन खाली है ' आदि उनके सफल नाटक है। उन्हें कई बार सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार भी मिला है। ' हिमालूय की छाया ' और 'आधे-अधूरे ' नाटक की केंद्रीय भूमिका के लिए उनकी प्रिय पत्नी चंदा जी को भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिल गया था। कहना होगा कि ओमप्रकाश जी को आज भी नाटक से बहुत लगाव है।

1.2.5 अच्छे अभिनेता -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को नाटकों का निर्देशन करने के साथ-साथ अभिनय करने की चाहत भी थी। उनके अभिनय के गुण में काफी विद्‌वत्ता झलक उठती है। मराठी नाटक ' मोरूची मावशी ' के अनुदित हिंदी नाटक में मुख्य भूमिका के कारण लोग उन्हें रंगकर्मी के रूप में पहचानने लगे थे। इसके साथ ही ' इकतारे की आँख ', ' दो चेहरे ', ' अब्दुल्ला दीवाना ', ' अंधी का हाथी ', ' अ स्टडी इंन द ने ड़ 'आदि नाटकों में उन्होंने सफल अभिनय किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि को कई चर्चित सफल निर्देशकों के साथ काम करने का अवसर मिला है। खुद अच्छे अभिनेता है ही फिर भी दूसरों का अभिनय देखने में उन्हें काफी दिलचस्पी थी । मराठी नाटक ' सखाराम बाइंडर ' , 'खामोश अदालत जारी है ', इसके साथ ' हयवदन ',' आषाढ़ का एक दिन ' आदि नाटकों में अमरीश पुरी, अमोल पालेकर, सुनीला प्रधान, सुलभा देशपांडे आदि के अभिनय से ओमप्रकाश वाल्मीकि बहुत प्रभावित थे ।

1.2.6 सहयोगी वृत्ति -

ओमप्रकाश वाल्मीकि भले ही समाज व्यवस्था के कारण प्रताड़ित तथा

उपेक्षित रहे हो, लेकिन उनके व्यक्तित्व में दुसरों को सहयोग देना यह एक महत्त्वपूर्ण गुण छिपा है। भलेही वे सत्कार से दूर रहे हो लेकिन आज उनके गाँव के वर्ण व्यवस्था के धनि उनके घर आते हैं, तो वे आतिथि देवो भव: समझकर उनका आदर करना अपना कर्तव्य समझते हैं। उनका सभी प्रकार से खयाल रखते है तथा उन्हें सहयोग देते हैं।

1.2.7 अनेक उपनाम वाले -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को लोग अलग-अलग नामों से पुकारते थे। घर में उनकी माताजी सिर्फ ' ओमप्रकाश ' नाम से पुकारती थी। उनके पिताजी इन्हें ' मुंशीजी ' तो बस्ती के लोग ' पाल्ला ' के नाम से पुकारते । बम्बई फॅक्टरी के उपाध्याय उन्हें ' महर्षि ' नाम से पुकारते थे। ये सभी नाम उनको प्रिय हैं। वे कहते है - " सभी नाम आपने है, अपनों ने दिये हैं, सभी प्रिय हैं।"[1] लेकिन सबसे ज्यादा लगाव उनको ' ओमप्रकाश ' नाम से है क्योंकि इसी नाम से उनकी माता उन्हें पुकारती थी ।

1.2.8 अंधश्रद्धा के विरोधी -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की बस्ती के लोग अंधश्रद्धा पर बहूत विश्वास रखते थे। कोई बीमार पड़ता तो इलाज दवा दारू के बदले बुवा द्वारा मारपीट होती थी । एक बार लेखक बीमार पड़े थे तब दवा दारू चल रही थी। लेकिन ऊस समय उनके घर एक रिश्तेदार आए और कहने लगे इसे तो ओवरा (भूत की लपेट)है। वह बुवा-बाजी जानता था, थोड़ी देर जमीन पर बैठा रहा और अचानक हिलने लगा। कपड़ों का कोड़ा बनाकर वह लेखक को पीटने लगा । पहले से कमजोर और ऊपर से मार लेखक को बहुत गुस्सा आया और चिल्लाकर बोले -" मुझे जान से मार डालेगा यह । इसे रोको । मुझे भूत-वूत कुछ नहीं चिपटा है।"[2] लेखक के चिल्लाने से बुवा का देवता भी शांत हुआ और वह चुपचाप बैठ गया । लेखक लिखते है -"मेरा विश्वास और पुख्ता हो गया था कि यह सब ढोंगबाजी हैं, जहाँ आस्था के सामने तर्क कोई मायने नहीं रखता था। न जाने कितने लोग इन भगतों ने

---

1 परिशिष्ट क्र. 2 से उद्घृत

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - जूठन , पृष्ठ 56

मार डाले ।'''[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि के दो भाई भी सही दवा-दारू और सही इलाज के अभाव के कारण चल बसे थे। इसी अंधश्रद्धा के कारण उनके मन में चीढ़ थी। लेखक के घर में ब्याह के मोके पर सूअरों को बलि चढ़ाने की प्रथा है, खुद अपनी शादी में उन्होंने 'बलि प्रथा ' का विरोध किया है। इससे स्पष्ट है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि को अंधश्रद्धा, बुवाबाजी, बलि प्रथा आदि से सक्त नफरत और विरोध है।

1.2.9 कथा-कथनकार -

ओमप्रकाश वाल्मीकि बचपन में अपनी माँ से अनेक सारी कहानियाँ सुनते थे, जो धारावाहिक रूप में चलती थीं। अपनी माँ के कथन के टेक्नीक को ओमप्रकाश जी ने प्राप्त किया जिससे कथा-कथन में वह काफी प्रभावित रहे । इस कारण वे भी कथा-कथन करने लगे । वे कहते है - '' मेरे सहयोगी मित्रों समवेत राजेंद्र यादव और मैत्रीयी पुष्पा जी भी हमारे कथा-कथन में सम्मिलित होकर दलित बस्तियों में जमीन पर मिट्टी में बैठते थे। ''[2] वे कथा-कथन सुनने में मग्न रहेते थे। वे वाल्मीकि जी के कथा-कथन करने के कौशल से काफी प्रभावित थे।

1.2.10 शिक्षा के लालसी -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को स्कूल में काफी कुछ सहना पड़ता था। आजादी मिलकर कुछ ही साल हो गए थे। स्कूल में दलितों की पूर्णत: विपरीत परिस्थिति थी। लड़कों द्वारा अपमान और मास्टरों द्वारा मार यह तो आम बाते थी। मास्टरों के आदर्श से ज्यादा उनकी दहशत वाल्मीकि जी के मन में थी। बाकी छात्रों से ज्यादा दलित छात्रों पर थप्पड़, लाथ तथा घुसों की बौछार होती थी। ओमप्रकाश जी को ऐसी अवस्था में शिक्षा लेनी पड़ रही थीं। मास्टरों की दहशत इनके मनपटल पर इतनी गहराई में उतर गयी है कि आज उनके सामने कोई आदर्श गुरू की बात करता है तो उन्हें - '' वे तमाम शिक्षक याद आते हैं जो माँ-बहन की गालियाँ देते थे। सुंदर लड़कों के गाल सहलाते थे और उन्हें अपने

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन' , पृष्ठ 56

2 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

घर बुलाकर उनसे वहियातपन करते थे।"[1] लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि ने शिक्षा के प्रति अपनत्व की भावना कभी नहीं छोड़ी । तमाम कष्ठ एवं यातना, प्रताड़ना, जिद्दोजेहाद को ही अपने शिक्षा के कारण झेलते रहे । क्योंकि उन्हें अपने माता-पिता के तमाम कष्टों को न्याय देना था। इसलिए विपरित स्थिति में भी उनके मन में शिक्षा की लालसा थी।

1.2.11 जन्म से लेकर जीवन भर जाति में फँसे ओमप्रकाश -

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित समाज से होने के कारण जीवन के हर क्षेत्र में उनको जाति के विचित्र अनुभवों का सामना करना पड़ा । बचपन ऐसे वातावरण में बीता जहाँ मिनटभर की साँस में दम घूँट जाएँ। घर के पीछे सार्वजनिक खुला सौचालय था। ऐसे विचित्र माहौल में बचपन बीता , स्कूल में दूसरों से दूर बैठना पड़ता था " त्यागियों के बच्चे ' चूहड़े का ' कहकर चिढ़ाते थे। कभी-कभी बिना कारण पिटाई भी कर देते थे।"[2]इस कारण वे अंतर्मुखी और चिड़चिड़े बन गये । स्कूल में इनके साथ इस पद्धति से बर्ताव होता था, कि स्कूल छोड़कर भाग जाए । साफ सुधरे कपड़े पहनकर स्कूल में जाए तो लड़के कहते - " अबे चूहड़े का नए कपड़े पहनकर आया है। मैल पुराने कपड़े पहनकर स्कूल जाओ तो कहते अबे चूहडे के दूर हट बदबू आ रही है।"[3] अजिब हालात थे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में चाहत होते हुए भी इन्हें जाति के कारण स्कूल के अध्यापक सहभागी नहीं होने देते थे। वह मर-मर के जी रहे थे। रास्ते में आते-जाते लोग तथा बच्चे इनकी जाति और देहातीपन पर मजाक उड़ाते थे। कॉलेज में भी जातीय वातावरण ने इन्हें चैन से जीने नहीं दिया । सविता नाम की ब्राह्मण लड़की इनसे बहुत प्यार करती थी, जब उसे इनकी जाति का पता चला तो अचानक इनके प्रेम में दरार निर्माण हो जाती है। हर एक के जीवन में प्रेम अमृत बनके आता है लेकिन यही अमृत सिर्फ जाति के कारण ओमप्रकाश के जीवन में जहर बन जाता है। आज भी जातीय पीड़ा का सामना करना पड़ रहा है। वे कहते है "मेरे ऐसे कई मित्र है जो बाहर गले-मिलते हैं, साथ चाय पीते हैं, लेकिन मेरे घर में

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन' , पृष्ठ 14

2 वही, पृष्ठ 13

3 वही, पष्ठ 13

आने से कतराते है पीट पीछे आलोचना करते हैं ।''[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि आज भी ऐसे वातावरण का सामना डटकर कर रहे हैं।

1.2.12 ओमप्रकाश को ' वाल्मीकि ' से लगाव -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को ' वाल्मीकि ' सरनेम के कारण बहुत पीड़ाएँ, दु:ख दर्द , परेशानी सहनी पड़ी है। इस सरनेम के कारण जाति का बोध होता है। परिणाम स्वरूप अनेक बार अपमान एवं प्रताड़ना सहनी पड़ी है। उनके एक मित्र है उनका कहना था 'वाल्मीकि' सरनेम के कारण लेखक जान बुझकर ब्राह्मणवादी दलदल में फँसे हैं, 'वाल्मीकि' सरनेम छोड़ देना चाहिए। उनकी पत्नी की भी यही राय थी। उनकी पत्नी 'खैरवाल' सरनेम जोड़ना ज्यादा पसंद करती है। इनकी भतीजी सीमा को कॉलेज में पूछा गया कि आप ओमप्रकाश वाल्मीकि को जानती है ? तब सीमा ने कक्षा में नजर डाली और इन्कार कर दिया । सीमा ने अपनो सफाई में कहा '' सभी के सामने अगर मैं मान लेती कि आप मेरे चाचा हैं तो सहपाठिनों को मालूम हो जाता कि मैं ' वाल्मीकि' हूँ .... आप फेस करते हैं, मैं नही कर सकती ..... गले में ' जाति ' का ढ़ोल बाँधकर घूमना कहाँ की बुद्धिमानी है ? ''[2] इस संदर्भ में सुदेश तनवीर कहते हैं - ''जूठन में बालक ओमप्रकाश से लेकर जुझारू और जागरूक ओमप्रकाश वाल्मीकि तक जातीय दंशों की पीड़ा झेलता है, फिर भी न तो उससे जाति का मोह टूटता है और न ही उससे ध्वस्त करता है बल्कि वह 'वाल्मीकि' के रूप में उसे लगा लेता है।''[3] ओमप्रकाश ने बहुत कुछ सहा है इस 'वाल्मीकि' के कारण फिर भी वे कहते हैं - '' अब तो यह 'सरनेम' मेरे नाम का एक जरूरी हिस्सा बन गया है, जिसे छोड़कर ' ओमप्रकाश ' की कोई पहचान नहीं ''[4] वाल्मीकि की लगाव संबंधी उनका कथन है - '' 'वाल्मीकि' लगाव से नहीं लगाया बल्कि विरोध दर्ज

---

1 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन', पृष्ठ 153

3 सम्पा. कुसुम चतुर्वेदी -'नया मानदंड,' अप्रैल-जून , 2003, पृष्ठ 36

4 ओमप्रकाश वाल्मीकि - 'जूठन', पृष्ठ 158

करने के लिए ताकि मुझसे कोई मेरी जाति ना पूछे ''[1] सब के विरोध के बावजूद ओमप्रकाश जी को 'वाल्मीकि' से बहुत लगाव है तथा उनकी पहचान भी सिद्ध होती है।

1.2.13 दलितों के प्रतिनिधिक लेखक -

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने जीवन में जितनी भी कहानियाँ लिखी हैं लगभग सारी कहानियाँ दलित जीवन से संबंध रखती हैं। राजेंद्र यादव जी भी इसका स्वीकार करते है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित कहानियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऐसी ताकत और गहराई वाल्मीकि जी की कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। जिस तरह गैर दलितों ने भी दलितों पर कहानियाँ लिखी है, लेकिन आप दलित होकर गैर दलितों पर कहानियाँ क्यों नहीं लिखते इस संदर्भ में वे कहते हैं - '' मैं गैर दलितों पर भी लिखना चाहता हूँ, लेकिन मेरी नजर से आज आवश्यकता है दलित लेखन की जिसे मैंने प्राथमिकता दी है। जो स्वाभाविक है।''[2] आज जो उनकी खास पहचान है वह दलितों के प्रतिनिधिक लेखक के रूप में ही सिद्ध होती है।

1.2.14 दुर्दैवी ओमप्रकाश -

अपने परिवार में सबसे छोटे होने के कारण ओमप्रकाश वाल्मीकि को माता-पिता का प्यार बहुत मिला । जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु ही है। हर एक जीवंत प्राणी को मरना पड़ता है। लेखक जब नौकरी पर थे तब उनकी माँ की तबीयत देखकर चंद्रपुर वापस गए। ठीक एक सप्ताह बाद उनकी माँ गुजर गई। लेकिन यह खबर ओमप्रकाश वाल्मीकि को एक सप्ताह बाद मिली । अपनी माँ का अंतिम चेहरा तथा अंत्य यात्रा में शामिल न होना इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ? इसकी पीड़ा काँटों की तरह उनके मन में चूभ गई थी। लेखक की माँ के देहांत से उनके पिताजी विचलित एवं बीमार रहने लगे थे। उनके मन में ड़र था कि पिताजी भी न गुजर जाए । ओमप्रकाश जी अपनी पिताजी की तबीयत देखकर जिस दिन वापस लौट रहे थे, उसी दिन पिताजी का देहांत भी हो गया ।

---

1 परिशिष्ट 1 से उद्धृत

2 परिशिष्ट 4 से उद्धृत

लेखक शायद उस वक्त ट्रेन में होंगे । ओमप्रकाश जी लिखते है - ‘‘माँ और पिताजी की अर्थी को कंधा देने का अवसर मुझे नहीं मिला था। जिसे बनाने में वे संघर्ष करते रहे वही उनसे इतना दूर हो गया था। एक ऐसा दु:ख जिसे मैंने अपने मन के तहखानों में छिपाकर बैठा हूँ ।’’[1] जिसे बनाने में उनकी माता-पिता ने दिन-रात कष्ट किया था, उनकी अंतिम यात्रा में शामिल न होना कितना दुर्भाग्यपूर्ण है। ओमप्रकाश कहते हैं - .... सिर्फ दु:ख ही व्यक्त कर सकता हूँ ।

1.3 कृतित्व -

हिंदी दलित साहित्य में जितने नाम हमारे सामने आते हैं उनमें प्रमुखत: ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम अनिवार्य रूप में आता है। अपनी रचना कर्म की ताकत से अल्पावधि में वे किसी के परिचय के मोहताज नहीं रहें। यहाँ उनके कृतित्व का विवेचन, विश्लेषण प्रस्तुत हैं -

*** प्रकाशित कृतियाँ -**

1.3.1 ‘जूठन’ -

‘जूठन’ ओमप्रकाश वाल्मीकि की बहुचर्चित आत्मकथा है। इसमें लेखक ने समाज में होनेवाली अपनी जाति की उपेक्षा को प्रस्तुत कर ऊँची जाति के दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत किया है। जिसमें उनके प्रति भद्दी गालियाँ होती थीं। साथ ही नीचले जाति के साथ होनेवाले सवर्ण समाज के दैनिक व्यवहार को भी प्रस्तुत किया है।

आत्मकथा लिखना आसान नहीं होता तलवार की धार पर नंगे पैर चलने जैसा है। सामाजिक सड़ांध को उजागर करनेवाले दलित लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि ने ‘जूठन ’ के माध्यम से हिंदी ‘ आत्मकथा ’ साहित्य को सही दिशा एवं न्याय देने की कोशिश की है। आत्मकथा लिखना खतरों से खाली नहीं होता । ओमप्रकाश वाल्मीकि का अपने मन में अपनी व्यथा-कथा को शब्द-बद्ध करने का विचार काफी समय से था।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - ‘जूठन’ से, पृष्ठ 134

लेकिन काफी प्रयासों के बाद भी सफलता नहीं मिल पा रही थी। कितनी बार लिखना शुरू किया और हर बार लिखे गए पन्ने फाड़ दिए गए । वे कहते है - विगत जीवन के अनुभवों में तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाएँ एवं प्रताड़ना को एक बार फिर जीना पड़ा , इस दौरान गहरी मानसिक यंत्रनाएँ ओमप्रकाश जी ने भोगी है।

आत्मकथा लिखने वाले एक हर लेखक को इसी अनुभव से गुजरना पड़ता है। मराठी के दलित साहित्यकार लक्ष्मण गायकवाड के भी कुछ यही अनुभव हैं। उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिलने पर शरणकुमार लिम्बाळे से कहा था " शरण एक लाख रूपये बहुत मँहगें पड़े एक-एक रूपये में एक-एक गाली पड़ी ।"[1] सारांश यही है कि आत्मकथा लिखना फिर से यातनामय पहाड़ से गुजरना है। आत्मकथा के संदर्भ में प्रा. आदि का कथन दृष्टव्य है - " एक तरफ संकट, दूसरी तरफ स्वयं को जानना, अस्मिता को पहचानना, इतिहास के कहे पन्नों पर अपने आपको देखना, परखना, दलित आत्मवृत्तकार की इच्छा है। पर अपने सारे जीवन को अभिव्यक्त करते हुए दु:ख, यातना, पीड़ा दर्द से वह कराह उठता है।"[2] ठीक ऐसी ही हालात में ओमप्रकाश वाल्मीकि का जीवन बीता है। बचपन से लेकर जवानी तक मिले जख्मों को सहते आए, इन्हें संग लेकर चले, जख्मों का हिसाब किताब रखते हुए अपने आत्मवृत्त की रचना की है। इनकी आत्मकथा को पढ़ते-पढ़ते कहीं मन-मस्तिष्क उत्तेजित होने लगता है, तो कहीं वह पसीज जाता है। ' जूठन ' में धार्मिक, सामाजिक, अंधविश्वासों में सिसकता समाज, शिक्षा एवं शिक्षक की मनोवृत्ति का सामाजिक पक्ष आदि अनेक घटनाएँ संचित हैं। 'जूठन' सम्बधी डॉ. अजमेर सिंह काजल कहते हैं - " जूठन तथाकथित संभ्रांत समाज एवं उनकी झूठी शान का वर्णन ही नहीं करती अपितु उसकी मानसिकता के तंतुओं को छिताराकर प्रस्तुत करने वाली कृति है।"[3] सारांशत: ओमप्रकाश वाल्नीकि की यह 'आत्मकथा ' भंगी, चूहड़े जन जाति के

---

1 कुसुम चतुर्वेदी- प्रा. अदि,'नया मानदंड,' अप्रैल-जून,त्रैमासिक,2003, पृष्ठ 56

2 वही, पृष्ठ 56

3 सम्पा. नंदकिशोर मिश्र -'भाषा,' सितंबर-अक्तूबर ,2000, पृष्ठ 201

दु:ख, दर्द, व्यथा, वेदना, रूढ़ि परंपरा, रीति-रिवाज, अंधश्रद्धा, अशिक्षा और पशुतुल्य जीवन का जीवंत दस्तावेज है।

1.3.2 ' सलाम ' (कहानी संग्रह)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का ' सलाम ' बहुचर्चित एवं प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन 2000 डा. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें दलित जीवन के कुछ पहलू , समस्याएँ एवं परंपराएँ आदि प्रस्तुत हैं। इस संग्रह में दलितों के जीवन-संघर्षों के साथ-साथ उनकी व्यथा छटपटाहट, उनके इर्द-गिर्द फैली विसंगतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। 'सलाम ' कहानी संग्रह में ' सलाम ' ,' बैल की खाल ', ' सपना', 'भय ', ' कहाँ जाए सतीश ', ' जिनावर ', ' कुचक्र ', 'अम्मा ', 'खानाबदोश,' ' गोहत्या', ' ' ग्रहण ', ' पच्चीस चौका डेढ़ सौ,' ' बिरम की बहू ', ' अंधड ', आदि कहानियाँ संकलित हैं।

1.3.3 ' घुसपैठिये ' (कहानी संग्रह)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह दूसरा कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन 2003 को राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें दलित जीवन के लिए प्रतिबद्ध, मार्मिक और संवेदनशील कहानियाँ हैं। संकलित कहानियाँ पढ़ने पर दलितों के प्रति सुख-दु:ख, व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश, व्यथा-विन्यास के अनुरूप तर्क और विचार दलितों की मुखरता एवं संघर्ष ही दृष्टिगोचर होता है। इस संग्रह में ' घुसपैठिये', 'यह अन्त नहीं ', ' मुंबई कांड़', ' शवयात्रा ', 'प्रमोशन', ' कूड़ाघर, '' मैं ब्राह्मण नहीं हूँ', 'दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन', ' रिहाई', ' ब्रम्हास्त्र ', ' हत्यारे ' और ' जंगल की रानी' आदि कहानियाँ संकलित हैं।

1.3.4 कविता संग्रह -

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कविताओं में दलितों की व्यथा और छटपटाहट को वाणी देने का काम किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। उनके प्रकाशित कुछ कविता संग्रह इस प्रकार हैं -

1) 'सदियों का संताप ', 2) ' बस्स! बहुत हो चुका 3) ' अब और नहीं ' (शीघ्र प्रकाश्य)

1.3.5 दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह आलोचनात्मक रचना हैं। इसका प्रकाशन सन 2001 को राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली से हुआ है। यह पुस्तक दलित साहित्यांदोलन की बड़ी कमी को पूरी करते हुए दलित रचनात्मकता की कुछ मूलभूत समस्याओं और प्रस्थान बिंदुओं की खोज भी करती है। साथ ही यह रचना साहित्य के स्थापित तथा वर्चस्वशाली गढ़ों को आस्थाओं के बल पर चुनौती भी देती है।

1.3.5 नाटक -

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने महाराष्ट्र में ' मेघदूत ' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की थी । इसके माध्यम से बहुत सारे नाटक लिखे एवं उनका मंचन तथा अभिनय, निर्देशन किया है। उनके कई नाटकों को पुरस्कार भी मिल गये हैं। उनके संस्था दूवारा निम्नांकित महत्त्वपूर्ण नाटकों का सफलता से मंचन हुआ है।

'' आधे-अधुरे ' (मोहन राकेश), अभिनय एवं प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कार -

' दुलारीबाई ' (मणिमधुकर)

' एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ ' (शरद जोशी)

' अंधी का हाथी ' (शरद जोशी)

' हिमालय की छाया ' (वसंत कानेटकर) अभिनय, निर्देशन एवं प्रस्तुतीकरण के लिए पुरस्कार ,

' सिंहासन खाली है ' (सुशिल कुमार) अभिनय के लिए पुरस्कार,

' इकतारे की आँख ' (मणिमधुकर)

' अ स्टडी इन द नेड ' (इंग्लिश)

' दो चेहरे ' (स्वंयलिखित) अभिनय के लिए पुरस्कार

' अब्दुल्ला दीवाना ' (लक्ष्मीनारायण लाल) ''[1]

ओमप्रकाश वाल्मीकि को नाटक में अभिनय तथा निर्देशन के लिए बहुत रूचि थी। उन्होंने 60 से ज्यादा नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन किया है। अनेक प्रतियोगिताओं में अभिनय एवं न्दिेशन के लिए पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

1.3.6 अन्य -

* अनेक कथा संकलनों एवं कविता संग्रहों में रचनाएँ संकलित ।

* प्रज्ञा साहित्य के दलित साहित्य विशेषांक का अतिथि संपादन ।

* पत्र पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित ।

* विभिन्न भाषाओं में कविताएँ तथा कहानियाँ अनूदित ।

* प्रथम दलित लेखक साहित्य सम्मेलन 1993 नागपुर के अध्यक्ष ।

* " जूठन 'का ' जूठ' पंजाबी अनुवाद ।

* "जूठन ' का अँग्रेजी अनुवाद ।

1.3.7 पुरस्कार -

ओमप्रकाश वाल्मीकि को अपने जीवन में निम्नांकित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं --

''* डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार - 1993 ।

* परिवेश सम्मान - 1995 ।

* जयश्री सम्मान - 1996 ।

* कथाक्रम सम्मान - 2000 । ''[2]

1.3.8 सम्प्रति -

आज कल वे देहरादून में रहते है । भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के उत्पादन विभाग के अधीन आर्डनैस फैक्टरीज की ओप्टो -इलैक्ट्रोनिक्स फैक्टरी में

---

1 परिशिष्ट 3 से उद्धृत

2 वही

अधिकारी के रूप में कार्यरत है।

निष्कर्ष –

ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के त्रिवेचन -विश्लेषण के पश्चात मैं यह प्रामाणिक निष्कर्ष निकालना चाहता हूँ कि उनका व्यक्तित्व प्रामाणिक, अध्ययनशील, स्वाभिमानी, साहसी, कलाप्रेमी, अंधश्रद्धा के विरोधी, यथार्थ के हिमायती और समाज में बुरी स्थितियों के परिवर्तन की आत्मीय भावना से ओतप्रोत दृष्टिगोचर होता है। चूहड़े जाति में जन्मने कारण उन्हें बचपन से लेकर जवानी तक अनेक जातीय दंश, पीड़ा, यातना, अपमान तथा उपेक्षा का सामना करना पड़ा है। बचपन में गंदगी भरे माहौल से किसी तरह उपजे, प्रायमरी स्कूल में शिक्षा की जगह सफाई का काम, मास्टरों की दहशत और बच्चों द्वारा 'चूहड़े' का कह कर चिढ़ाना आज भी उन्हें दस्तक देता है। इनके प्रति स्नेह भरा व्यवहार अचानक चमत्कार की भाँति बदलता था जब सामने वाले को इनकी जाति का पता चलता । लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने जीवन में कभी हार नहीं मानी । उन्होंने अपने नाम के साथ 'वाल्मीकि' सरनेम जोड़ा ताकि जान बुझकर कोई इनसे जाति न पूछे । आजादी के बाद भी दलित जीवन खतरों में है। वाल्मीकि जी ने दलितों की पीड़ा को अपने गहन अनुभव की विस्तृत परिधि में प्रस्तुत किया हुआ परिलक्षित होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित जीवन कितना दर्दनाक, दु:खदायी, भयानक और क्रूर होता है इसे भोगा है। उनकी गहरी सुझ-बुझ दलित साहित्य को सशक्त और विकसित करती परिलक्षित होती है। सामाजिक वातावरण ने उन्हें कभी चैन से जीने नहीं दिया । 'सत्य' और 'प्रानाणिकता' के दो पग लेकर चलनेवाले ओमप्रकाश ने बहुत कुछ बर्दाश्त किया है और इसी बर्दाश्त कर लेने की आदत ने उनसे बहुत कुछ छिना है। आज जब सोचते हैं तो हैरान हो जाते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का व्यक्तित्व संघर्षशील, कर्मशील, महान विचारक, संवेदनशील, बहुमुखी प्रतिभावान, यातनामय एवं कष्टों से ही बना हुआ परिलक्षित होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया

किया गया है। उनके जीवन के विविध पहलू उनकी मौलिकता को मजबूत बनाते हैं। उनका व्यक्तित्व प्रगतिशील विचारक, गहन अध्येता, मनुष्य की यथार्थता को सार्थक रूप देनेवाला जाति के बवंड़र में फँसकर भी अनेक तूफानों का सामना एवं संघर्ष कर अपने जीवन की कश्ती को आदर्शमय दिशा देनेवाला दृष्टिगोचर होता है।